International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(2): 10-11

International Journal of Sanskrit Research
अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(2): 10-11
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 07-01-2017
Accepted: 08-02-2017

सुरेन्द्र कुमार
शोध छात्रा, दयानन्द वैदिक शोध्पीठ, प. वि. वि. चण्डीगढ़, पंजाब, भारत।

Correspondence
सुरेन्द्र कुमार
शोध छात्रा, दयानन्द वैदिक शोध्पीठ, प. वि. वि. चण्डीगढ़, पंजाब, भारत।

वेदों में सिंचाई व्यवस्था का स्वरूप

सुरेन्द्र कुमार

प्रस्तावना

वैदिक काल में कृषि से उत्पन्न अन्न आजीविका का मुख्य साध्न था। कृषि भूमि और जल पर आधरित होती है, जिस प्रकार हम भूमि के बिना कृषि की कल्पना नहीं कर सकते, उसी प्रकार जल के बिना कृषि की कल्पना नहीं की जा सकती। कृषिकर्म में सिंचाई एक अनिवार्य अंग है। सिंचाई से तात्पर्य है–जल सेचन प्रक्रिया अर्थात् खेत में खड़ी फसल की वृद्धि के लिए जल पहुँचाना ही सिंचाई कहलाता है। भारतीय कृषक वैदिककाल से ही इस बात से परिचित था कि सिंचाई कृषि का प्राण है तथा हम वैदिक कृषकों को सिंचाई के विभिन्न साध्नों की व्यवस्था करते हुए पाते हैं। वैदिक काल में सिंचाई के मुख्यतः दो साध्न थे–प्राकृतिक साध्न तथा कृत्रिाम साध्न। प्राकृतिक साध्नों के अन्तर्गत वर्षा, नदी, झील और झरनें तथा कृत्रिाम साध्नों में नहर, कूप, अवत, तालाब एवं जलाशय आदि स्रोत थे। इन सभी साध्नों का वर्णन वेदों में प्राप्त होता है।

वेदों में वर्षा को सिंचाई का प्रमुख साध्न माना गया है। वर्षा सिंचाई के लिए प्राकृतिक स्रोत था। ऋग्वेद के पर्जन्यसूक्त और अथर्ववेद के वृष्टिसूक्त में वर्षा का बहुत सजीव चित्राण हुआ है।[1] यजुर्वेद में वर्षा की प्रक्रिया का वर्णन करते हुए कहा गया है कि किस प्रकार बादल बनते है और उनसे हल्की से लेकर तीव्र तक वर्षा होती है।[2] अथर्ववेद के प्राणसूक्त में वर्षा को प्राण स्वरूप बताते हुए वर्षा के लाभों का विस्तारपूर्वक वर्णन है। इसमें वर्णन किया गया है कि किस प्रकार वर्षा भूमि को जल से भर देती है और सभी औषध्यिों, वनस्पतियों और अन्न आदि में नवीन चेतना का संचार होता है। वर्षा से पृथ्वी के तृप्त होने से सभी प्रकार के अन्न और वनस्पतियाँ उत्पन्न होती है। एक मन्त्रा में तो मेघ की प्रशंसा करते हुए उसे शक्तिशाली पिता कहा गया है।[3]

वर्षा के जल के अतिरिक्त सिंचाई के अन्य साध्नों का उल्लेख भी वेदों में प्राप्त होता है। ऋग्वेद में चार प्रकार के जलों का वर्णन है,[4] जिसका उपयोग सिंचाई के लिए होता था–

(क) दिव्या आपः–वर्षा का जल।

(ख) खनित्रिाम आपः–कुओं या बावली का जल।

(ग) स्वयंजा आपः–झरनों आदि का जल।

(घ) समुद्रार्था आपः–समुद्र में मिलने वाली नदियों का जल।

अथर्ववेद में भी सिंचाई के काम में आने वाले जल के अनेक प्रकारों का उल्लेख मिलता है, जैसे नहरों के जल से सिंचाई,[5] नदियों के जल से सिंचाई,[6] तालाबों के जल से सिंचाई,[7] कुओं आदि से सिंचाई।[8] यजुर्वेद[9] में भी सिंचाई के अनेक साध्नों का उल्लेख मिलता है। स्त्राुत्त्य (नाला) पत्थ्य (पतली नालियों द्वारा पानी) नीप्य (झरनों या नीचे की ओर बहते हुए पानी), कुल्या (नहर) नादे (नदी) वैशन्त (तालाब) सर (तालाब) कुप्य (कुएं का जल) आवट (गड्ढ़ों, पोखरों का जल) मेघ्य (मेघ जल) वर्ष्य (वर्षा का जल) तथा अवर्ष्य (बिना वर्षा का जल) आदि।

तैत्तिरीय सहिता[10] में भी सिंचाई के विभिन्न साध्नों का वर्णन मिलता हैं ये साध्न है–नाला–पतली नालियों द्वारा पानी, नहर, स्त्राोतों ;झरनोंद्ध का जल, तालाब, कुप, अवत, नदी और जलाशय आदि। इनमें छोटे–बड़े सभी साध्नों का उल्लेख है।

ऋग्वेद में नदियों से प्रार्थना की गई है कि–हे नदियों उत्तम अन्न को पैदा कर ऐश्वर्य बढ़ाने वाली नहरों को पानी से भरपूर कर दो।[11] नहरों की भान्ति कुएं भी वैदिककाल में सिंचाई के मुख्य साध्न थे। ऋग्वेद में कुएं के लिए कूप, कर्त, वव्र, काट, खात, अवत, ऋष्पदात, केवट, सूद, उतस् आदि पर्यायों का प्रयोग किया गया है। ऋग्वेद के अनुसार मानव नहरों के समान कूप खोदकर खेत, बगीचा आदि की सिंचाई कर, उससे उत्पन्न अन्न आदि से प्राणियों को तृप्त कर सुख प्रदान करते है।[12] ऋग्वेद में सिंचाई के लिए अवत का उल्लेख करते हुए उसके उपकरणों का भी उल्लेख मिलता है।

कुएं से सिंचाई के लिए कोश (चरस या मोट) और वरत्राा (मोटी रस्सी) का उपयोग होता था। कुएं से निकला पानी अश्मचक्र पर गिरता था। वहां से नाली के द्वारा खेतों में जाता था। यह जल सिंचाई और पशुओं के पीने के काम आता था।[13] अन्यत्रा रस्सी, बालटी तथा चक्र द्वारा कुओं से पानी निकालने का उल्लेख मिलता है।[14] वैदिक काल में तालाब और जलाशय भी सिंचाई के मुख्य साध्न थे। इन्हें वेशन्ता, वेशन्त्या, वेशन्ती तथा वेशान्ता आदि नामों से सम्बोध्ति किया गया है तथा इसके बांध को वर्त्रा कहा गया है।[15] संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वैदिक काल में कृषि के लिए सिंचाई व्यवस्था उन्नत थी। वैदिक कृषक आधुनिक कृषकों की भान्ति पूर्णतया सजग कृषक था। एक ओर तो सिंचाई के प्राकृतिक साध्न वर्षाजल एवम् नदियों के जल का प्रयोग सिंचाई के लिए करता था तथा दूसरी ओर कृत्रिाम साध्नों, नहर, तालाब, कुएं, जलाशय आदि का प्रयोग भी सिंचाई के लिए करता था। इस प्रकार आधुनिक काल की भान्ति वैदिक काल की सिंचाई व्यवस्था उच्च कोटि की थी।

संदर्भ सूची

1. ऋग्वेद–पर्जन्यसूक्त 5.8.3, अथर्ववेद–वृष्टिसूक्त 4.15।
2. यजुर्वेद–22.26।
3. अपो निषि×चन् असुरः पिता नः। अथर्ववेद 4.15.12।
4. या आपो दिव्याः खनित्रिामाः स्वयंजा। समुद्रार्थाः मामवन्तु–ऋग्वेद 7.49.2।
5. कुल्यः इव हृदयम्–अथर्ववेद–20.27.7।
6. सिन्धुभ्यः – वही 1.4.3।
7. अनुप्यः – वही 1.6.4।
8. खनित्रिामाः – वही 1.6.4।
9. नमः सुत्याय.....वर्ष्याय च–यजुर्वेद–16/37–39।
10. तैत्तिरीयसंहिता – 4/5/7/1–2, 7/4/13।
11. प्र पिन्वध्वमिषयन्ती यात् शीभम्। ऋग्वेद 3/33/12।
12. ऋग्वेद – 1.85.11।
13. वही – 10.101.5–7।
14. वही – 10.101.7।
15. अथर्ववेद – 1.3.7।